तथ्यात्मक रिपोर्ट

राज्य में सम्पादित की गयी विगत 5 पशु गणना के समय ऊंटों की संख्या निम्नानुसार रही है –

पशु गणना वर्ष					
वर्ष	**1997**	**2003**	**2007**	**2012**	**2019**
ऊंटों की संख्या (लाखों में)	6.69	4.98	4.22	3.26	2.13
कमी (प्रतिशत)	-10.32	-25.561	-15.261	-22.749	-34.663

ऊंटों की संख्या में गिरावट का मुख्य कारण कृषि एवं परिवहन के बढ़ते मशीनरी साधनों की वजह से ऊँटों की उपयोगिता में आई कमी है।

पशु गणना वर्ष 2019 के प्रारम्भिक आंकडों अनुसार देश में ऊंटों की संख्या मे लगभग 37 प्रतिशत की कमी आयी है। उक्त कमी राजस्थान के साथ–साथ अन्य सभी ऊष्ट्र प्रधान प्रदेशों में भी आयी है। ऊंटों की संख्या में आयी गिरावट गुजरात में 9.9 प्रतिशत, हरियाणा में 72.65 प्रतिशत तथा उत्तरप्रदेश में 69.45 प्रतिशत है।

"ऊंट" का संरक्षण करने, ऊंट पालकों को ऊंटों के प्रजनन हेतु प्रोत्साहित करने, टोडिये के पालन–पोषण हेतु एवम् राज्य में ऊंट की लगातार घटती संख्या को रोकने हेतु राज्य में राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत उष्ट्र विकास योजना लागू की गई थी, जिसके तहत विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करवाने के साथ–साथ ऊंटनी के ब्याने पर उत्पन्न नर/मादा बच्चे पर रूपये 10,000/– प्रति बच्चा प्रोत्साहन राशि के रूप में दी जा रही है।

उष्ट्र विकास योजना 2 अक्टुबर 2016 से लागू की गयी थी, योजना की भौतिक प्रगति निम्नानुसार रही है –

वर्ष	**जन्मे टोडियों की संख्या**	**लाभान्वित ऊंटपालकों की संख्या**
2016–17	8722	5434
2017–18	16592	8834
2018–19	17266	6532
योग	42580	20800

योजना की प्रगति से अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रतिवर्ष उत्पन्न होने वाले टोडियों की संख्या में लगातार बढोतरी हुई है। यह ऊंटपालकों द्वारा ऊंटनियों को अधिकाधिक संख्या में प्रजनन कार्य के उपयोग में लिये जाना स्पष्ट करता है जो कि योजना का मुख्य उद्देश्य था।

उष्ट्र विकास योजना के माध्यम से ऊंटों की घटती संख्या की गति को कम किया जाना सम्भव हो पाया है।

अतिरिक्त निदेशक, दवा प्रकोष्ठ